

कथा सरिता

कुएँ का मेंढक...

दो टैंडपोल एक कुएँ में बड़ी मस्ती से घूम रहे थे। दोनों अपनी पूँछ हिलाते और बाकी मेंढकों को अपना खेल दिखाते। उनकी शैतानियाँ देखकर एक वयस्क मेंढक बोला, "जितनी पूँछ हिलानी है हिला लो, कुछ दिन बाद ये गायब हो जायेगी। हा-हा-हा..."

ये सुनकर बाकी मेंढक भी हंसने लगे।

दोनों टैंडपोल फौरन अपनी माँ के पास गए और उस मेंढक की बात बताते हुए बोले, "माँ, क्या सचमुच हमारी पूँछ गायब हो जायेगी?" "हाँ", माँ बोली, "यह प्रकृति का नियम है, जब हम पैदा होते हैं तो हमारी छोटी सी पूँछ होती है पर समय के साथ हम विकसित हो जाते हैं, ये पूँछ गायब हो जाती है और हमारे पैर निकल आते हैं, तब हम कुएँ के बाहर भी जा सकते हैं, लम्बी छलांगें मार सकते हैं और कीड़े-मकौड़े खा सकते हैं।"

माँ की बात सुनकर पहले टैंडपोल ने मन ही मन सोचा, "इससे पहले कि पूँछ गायब हो मैं और मस्ती कर लेता हूँ, तालाब के कई चक्कर लगा लेता हूँ और एक से बढ़कर एक करतब दिखाता हूँ।"

और ऐसा सोचकर वह दोबारा मस्ती में घूमने लगा।

वहीं दूसरे टैंडपोल ने सोचा, "जब ये पूँछ एक दिन गायब ही हो जानी है तो इससे खेलने और मौज-मस्ती करने से क्या फायदा, जब पैर निकलेंगे तब मौज की जायेगी।" और वह कुएँ के एक हिस्से में गुमसुम सा रहने लगा।

फिर एक दिन वो भी आया जब दोनों टैंडपोल मेंढक विकसित हो गए।

दोनों काफी खुश थे और फैसला किया कि वे तालाब से निकल कर बगीचे में सैर करने जायेंगे।

पहला मेंढक किनारे पर पहुंचा और तेजी से छलांग लगा कर बाहर निकल गया। वहीं दूसरा मेंढक छलांग लगाने की कोशिश करता पर लगा ही नहीं पाता... मानो उसके पैरों में जान ही ना हो!

वह घबराया हुआ वापस अपनी माँ के पास पहुंचा और घबराते हुए बोला, "मेरे पैर काम क्यों नहीं कर रहे... मेरा भाई तो बड़े आराम से छलांग लगा कर बाहर निकल गया पर मैं ऐसा क्यों नहीं कर पा रहा?" माँ बोली, "बेटे, ये तुम्हारी वजह से ही हुआ है, तुमने ये सोचकर कि एक दिन पूँछ चली ही जानी है उसका इस्तेमाल ही बंद कर दिया और चुप चाप कोने में पड़े रहने लगे... मेरे समझने पर भी तुम नहीं माने और इसी वजह से तुम्हारा शरीर कमजोर हो गया, जिन अंगों का विकास ठीक से होना चाहिए था वो नहीं हो पाया और अब जिन पैरों का तुम इतने दिनों से इंतज़ार कर रहे थे वे भी बेकार निकल गए... मुझे अफसोस है पर अब तुम्हें अपनी पूरी जिन्दगी कुएँ का मेंढक बन कर ही बितानी होगी।"

बहनों और भाइयों, कई बार इस वक्त जो हमारे जीवन में हो रहा होता है वो हमें बेकार लगता है, लेकिन आज के काम से इसलिए बचने की कोशिश मत करिए कि बाद में आपको ये काम नहीं करता है या वो काम आपको अप्रिय लगता है, बल्कि उस कार्य का आनंद लीजिये, उसे और अच्छे ढंग से करने का प्रयास करिए। तभी आपकी योग्यताओं का विकास हो पायेगा और आपकी आंतरिक शक्ति विकसित हो पाएगी और भविष्य में जब आप जिम्मेदार स्थान पर पहुंचेंगे तब आप उस कार्य को बेहतरीन ढंग से कर और करवा पायेंगे। अन्यथा उस दूसरे मेंढक की तरह आप भी अपनी सीमित क्षमताओं के साथ कुएँ के मेंढक बनकर ही रह जायेंगे!

'उत्साह' बनाए रखता जिंदादिल

अमरीका में जीवन बीमा के विक्रय क्षेत्र में सर्वाधिक ख्याति प्राप्त फ्रैंक बैजर अपने व्यवसाय के आरंभिक काल में असफल हो चुके थे और उन्होंने अपने बीमा कंपनी के पद से इस्तीफा देने का निर्णय ले लिया था। एक दिन वे इस्तीफा लेकर कार्यालय पहुंच गए। उस समय प्रबंधक महोदय अपने विक्रेताओं की बैठक को सम्बोधित कर रहे थे। बैजर प्रबंधक-कक्ष के बाहर प्रतीक्षा करने लगे। अंदर से आवाज़ आई - "मैं जानता हूँ कि आप सभी योग्य विक्रेता हैं, किंतु आप यह विशेष ध्यान रखें कि योग्यता से भी अधिक महत्वपूर्ण है उत्साह, आपका जोश, जीवन की ऊर्जा, जो मंज़िल की दिशा में आपकी सहायता

करती है। आपका उत्साह, आपका उमंग ही आपको सफलता के शिखर पर पहुंचा सकता है।"

इन शब्दों को सुनकर बैजर ने अपना निर्णय बदल दिया और जब में रखे इस्तीफे को उसी समय फाड़ दिया। वे फौरन अपने घर चले गए। दूसरे दिन से फ्रैंक बैजर ने अपने काम को बड़े उत्साह के साथ करना शुरू किया। उनके उत्साह से ग्राहक इतने प्रभावित हुए कि कुछ वर्षों में वे अमरीका के नंबर वन सेल्समैन बन गए।

इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती है कि उत्साही जीवन के संघर्ष में धन की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि धन के बार-बार नष्ट हो जाने पर भी व्यक्ति उसे पैदा कर लेता है। उत्साह वह अग्नि है जो हमारे शरीर रूपी इंजन के लिए भाप तैयार करती है।

क्रोध से स्वयं की क्षति

सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट होते हुए भी महाराजा अंबरीष सुखों से परे थे और सतोगुण के प्रतीक माने जाते थे। एक दिन वे एकादशी व्रत का पारण करने को थे कि महर्षि दुर्वासा अपने शिष्यों सहित वहां पहुंच गए। अंबरीष ने उन्हें शिष्यों सहित भोजन ग्रहण करने का निमंत्रण दिया, जिसे दुर्वासा ने स्वीकार कर कहा, 'ठीक है राजन, हम सभी यमुना-स्नान करने जाते हैं और उसके बाद प्रसाद ग्रहण करेंगे।'

महर्षि को लौटने में विलंब हो गया और अंबरीष के व्रत-पारण की घड़ी आ पहुंची। राजगुरु ने उन्हें परामर्श दिया कि 'आप तुलसी-दल के साथ जल पीकर पारण कर लें। इससे पारण-विधि भी हो जाएगी और दुर्वासा को भोजन कराने से पूर्ण ही पारण करके पाप से भी बच जाएंगे।' अंबरीष ने जल ग्रहण कर लिया।

दुर्वासा मुनि लौट तो उन्होंने योगबल से राजन का पारण जान लिया और इसे अपना अपमान समझकर महर्षि ने क्रोधित होकर अपनी एक जटा नोची और अंबरीष पर फेंक दी। वह कृत्या

नामक राक्षसी बनकर राजन पर दौड़ी। भगवान विष्णु का सुदर्शन-चक्र, जो राजा अंबरीष की सुरक्षा के लिए वहां तैनात रहता था, दुर्वासा को मारने उनके पीछे दौड़ा। दुर्वासा ने इन्द्र, ब्रह्मा और शिव की स्तुति कर उनकी शरण लेनी चाही, लेकिन सभी ने अपनी असमर्थता जताई। लाचार होकर वे शेषशायी विष्णु की शरण में गए, जिनका सुदर्शन-चक्र अभी भी मुनि का पीछा कर रहा था। भगवान विष्णु ने भी यह कहकर विवशता जताई कि मैं तो स्वयं भक्तों के वश में हूँ। तुम्हें भक्त अंबरीष की ही शरण में जाना चाहिए, जिसे निर्दोष होते हुए भी तुमने क्रोधवश प्रताड़ित किया है।' हारकर क्रोधी दुर्वासा को राजा अंबरीष की शरण में जाना पड़ा। राजा ने उनका चरण-स्पर्श किया और सुदर्शन-चक्र लौट गया।

तात्पर्य यह है कि क्रोध ऐसा तमोगुण है जिसका धारणकर्ता दूसरों के सम्मान का अधिकारी नहीं रह जाता, यहाँ तक कि भगवान भी उसे अपनी शरण नहीं देते।

गीता में भी वर्णित है-

क्रोध से मोह उत्पन्न होता है और मोह से स्मरणशक्ति का विभ्रम हो जाता है। जब स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाती है तो बुद्धि का नाश होने पर मनुष्य अपनी स्थिति से गिर जाता है।



दिल्ली-हरिनगर। माननीय उपेन्द्र कुशवाहा, मिनिस्टर ऑफ स्टेट, ह्युमन रिसोर्स डेवलपमेंट से मिलकर ज्ञानचर्चा के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नेहा व ब्र.कु. चौधरी।



शांतिवन। ओमशान्ति मीडिया कार्यालय में राजयोग के बारे में गहन चर्चा करने के पश्चात् फिज़िकल फिटनेस मिस वर्ल्ड श्वेता राठौड़ को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय साहित्य 'हैप्पीनेस इंडेक्स' भेंट करते हुए ओमशान्ति मीडिया पत्रिका के संपादक ब्र.कु. गंगाधर। साथ हैं ब्र.कु. दीपक हरके।



दिल्ली-शक्तिनगर। रामनवमी के अवसर पर मोहन नगर मंदिर में भक्तों को 'शिव और शक्तियों से प्राप्ति' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. रूपा।



धरमपुर-मण्डी(हि.प्र.)। ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. उर्मिला, देवेश कुमार, डिवीज़नल कमिश्नर, चन्द्रशेखर जी, वाइस प्रेसीडेंट, खादी व ग्रामोद्योग डिपार्टमेंट व अन्य।



सैफयी-उ.प्र.। ग्रामीण आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, मेडिकल कॉलेज, पैरामेडिकल कॉलेज के डायरेक्टर के सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् उनके साथ चित्र में ब्र.कु. बहनें व भाई।



हिसार-हरियाणा। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ' विषय पर सेमिनार के दौरान प्रतिज्ञा लेते हुए ब्र.कु. पूनम, समाज कल्याण अधिकारी डॉ. डी.एस. सैनी, डॉ. प्रतिमा गुप्ता, सतोष हुड्डा, ब्र.कु. रमेश बहन व विशाल जनसमूह।